श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर....)

शुरु करें हम हर शुभ कारज, लेकर आपका नाम,
नमन गणपत बलकारी, आपकी महिमा भारी ।। टेर ।।

देवों में सबसे पहले, आपको मनायें,
पहले पहल पूजा, आपकी करायें,
सदा आपकी किरपा से ही, पूरण हो हर काम ।। १ ।।

श्याम प्रभु का हमने, कीर्तन कराया,
पहला संदेशा देवा, आपको भिजाया,
दया करो हे विघ्न विनाशक, मेटो विघ्न तमाम ।। २ ।।

श्रीफल मिठाई मेवे, भेंट चढ़ाये,
मोदक के भर भर हमने, थाल सजाये,
'हर्ष' आपके स्वागत का सब, आज किया इंतजाम ।। ३ ।।

श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : तुझे सूरज कहूँ या चन्दा....)

है नमन तुझे गणनायक, आ जाओ सिद्धि विनायक,
हम पलक बिछा कर बैठे, तेरे स्वागत में फल दायक।। टेर ।।

देवों में देव अनूठे, ब्रह्माण्ड में ना कोई दूजा,
सबसे पहले लम्बोदर, हरदम होती तेरी पूजा,
रिद्धि सिद्धि के दाता, तुम ही हो शुभ वर दायक ।। १ ।।

भगतों का पहला न्योता, स्वीकार करो आ जाओ,
सब अटके काम हमारे, आकर के सिद्ध कराओ,
हमको भी नाथ समझना, अपनी सेवा के लायक ।। २ ।।

इस ज्योत में नूर तुम्हारा, रोशन कर दो घर आंगन,
किरपा बरसा दो इतनी, हो सफल श्याम का कीर्तन,
तुम हो सर्वस्व हमारे, हम 'हर्ष' तुम्हारे पायक ।। ३ ।।

(राग रचयिता : रजनीश शर्मा)

किसने पिलाई तुझे घोट के बता, भोले भण्डारी तुझे भंग चढ़ गई,
भंगिया उतारो करो टोटके जरा, तेरा देखके ये रूप मैया गोरां डर गई ।।

हरी हरी भंग का मजा ही कुछ और है,
पीसने में किसी ने लगाया बड़ा जोर है,
तुझको संभाले कैसे गोरां तु बता,
दुविधा में आज मैया गोरां पड़ गई ।। १ ।।

लगता है भांग थोड़ी ज्यादा घुट गई है,
इसीलिए बाबा तुझे ज्यादा चढ़ गई है,
गटक गये हो बाबा लोटा भर-भर,
तुझपे असर थोड़ी ज्यादा कर गई ।। २ ।।

भगतों का टोला आया जै-जै तेरी बोलता,
भंग का नशा है ऐसा सिर चढ़ बोलता,
'हर्ष' दिवानों ने पिला दी जमके,
तुझे देखते ही गोरां माँ की नींद उड़ गई ।। ३ ।।

(तर्ज : मोहब्बत की झूठी)

तेरा नाम लेकर उठाई है काँवर,
मुझे पार करना करूणा के सागर ।। टेर ।।

दुर्गम डगर है लम्बा सफर है,
अरे भोलेनाथ तेरा बड़ी दूर घर है,
करी है दया मुझको दर पे बुला कर ।। १ ।।

सूना है जंगल बड़ा ही भयंकर,
पावों में कंकर चुभे चाहे शंकर,
छलकने न पाये तेरी जल की गागर ।। २ ।।

सूखा या गीला उबड़ या खाबड़,
चला 'हर्ष' तेरा उठा करके काँवड़,
मेरे बाबा की दिल में सूरत बसा कर ।। ३ ।।

(हरियाणवी भजन)

(तर्ज : सुपणे में भी मन्ने खाटू हाला...)

देखो रे सन्यासी आया, नीलकंठ का वासी आया,
धर्‌या जोगिया भेष बड़ा मतवाला दिखे सै,
मन्ने तो यो दुनिया का रखवाला दिखे सै ।। टेर ।।

तन पे राख रमाई सारे, नाग गले में फुफकी मारे,
एक हाथ में चिमटा दूजा भाला दिखे सै ।। १ ।।

आक धतूरे इसने भावे, लोटा भरके भंग चढावे,
मस्त मलगां साधु बड़ा निराला दिखै सै ।। २ ।।

मैदानां में इसका डेरा, शमशानां में रैन बसेरा,
दिखणे में यो बिल्कुल भोला भाला दिखै सै ।। ३ ।।

भाँत भाँत के स्वाँग रचावे, माया इसकी समझ न आवे,
जादूगर यो 'हर्ष' बड़ा मतवाला दिखै सै ।। ४ ।।

(तर्ज : खाटू के कण कण में बसेरा....)

पावन गंगा तट पे बसेरा करते भूतनाथ,
तन पे भष्मि राख रमाये, हर भगत की झोली बैठे भरते भूतनाथ,
जोगिया मेरा जोगिया, जोगिया तेरा जोगिया, जोगिया सबका जोगिया ।।

काला टीका हर माथे पर, ''भोले की पहचान''-२,
तारा शक्ति सामने इनके ''पास में है शमशान''-२,
आने वाले सेवक की सुध लेते भूतनाथ ।। १ ।।

ज्योर्तिलिंगों के सम इनकी, ''महिमा बड़ी अपार''-२,
शरणागत का भोले दानी, ''कर देते उद्धार''-२,
विधना का भी लेख मिटा दे बाबा भूतनाथ ।। २ ।।

नंगे पैरों दर्शन करने ''चल कर आते लोग''-२,
भूतेश्वर के दर पे मुरादें, ''पल में पाते लोग''-२,
'हर्ष' नहीं कोई कर सकता वो करते भूतनाथ ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : कभी दामन छुड़ा लिया.....)

ये आँखें बरस रही, दर्शन को तरस रही,
ओ भोले नाथ ऽऽऽऽ
कैसी खता हुई है जो तुमने मुझको भुला दिया,
मेरे बाबा - मेरे दाता, दयालु रेऽऽऽऽ,
कैसी भूल हुई है जो तुमने मुझको रुला दिया ।। टेर ।।

वो रह रह याद सताना, जिया को चैन न आना,
भगत को यूँ तरसा ना, भगत को यूं तड़पा ना,
तेरी भोली सी सूरत को जिया में मैंने बसा लिया ।। १ ।।

आँख से बरसे सावन, तेरे बिन सूना है मन,
दरश हो जाये पावन, तो सुखमय हो ये जीवन,
तेरी चाहत में पड़ करके, भगत ने खुद को मिटा लिया ।। २ ।।

दया की भीख मैं चाहूँ, दयालु रो रो बुलाऊँ,
तुझे कितना मैं चाहूँ, कहो दिल चीर दिखाऊँ,
'हर्ष' ने तेरे खातिर तो जहाँ से नाता तुड़ा लिया ।। ३ ।।

श्री शक्ती वन्दना

(तर्ज : साँवरे सलौने मेरा दिल करदा...)

अरे रंगरेज खुश कर दूं तुझे,
शेरांवाली मैया की चुनर रंग दे,
खुश होके मेरी मैया ओढ़ ले जिसे
सलमा सितारे प्यारे प्यारे जड़ दे ।। टेर ।।

गोटेदार सोणा सोणा जाल बनाना तू,
सांचा सांचा चुनरी में माल लगाना तू,
सोने और चांदी की तू बेल लगा-२,
हीरे और मोती चुनरी में जड़ दे ।। १ ।।

ज्योंतावाली आयेगी तो लाड लडाना है,
चुनड़ी उढ़ाके माता रानी को सजाना है,
आरी तारी का तू ऐसा जाल बिछा -२,
खुश होके मैया भण्डारे भर दे ।। २ ।।

'हर्ष' दिवाने कोई कसर ना छोड़ना,
एक एक तार प्यारे दिल से तू जोड़ना,
ओढ़ के भवानी जब बैठेगी यहाँ-२,
भगत करेंगे मैया जी के सजदे ।। ३ ।।

।। हरियाणवी भजन ।।

(तर्ज : चाल चौधरी श्याम धणी.....)

महिला: इबकी वैष्णो देवी की मन्ने सैर करा दे रे,
चाल चौधरी माता जी का दर्श करा दे रे ।।

पुरुष: तू करले त्यारी स्याणी-३, तेरी आस पुरा द्युँ रे
गठजोड़े सै इबकी माँ के धोक लगाल्युँ रे ।। टेर ।।

पुरुष: शिखर पहाड़ां पर बैठी सै देखो बा महाराणी,
पैदल ऊपर चढ़ते चढ़ते थक जागी तै स्याणी ।।

महिला: चढ़ जांगी मैं भी जाट-३, मन्ने इक लाठी ल्यादे रे, चाल चौधरी...

महिला: काजू किशमिश और छुआरे जाके भोग लगाऊँ,
मातराणी की ड्योढी पे चुनड़ी जाय चढ़ाऊँ ।।

पुरुष: सोणा सा तने स्याणी-३, मैं सूट सिमाद्युँ रे,...गठजोड़े सै...

महिला: आधे रस्ते चढ़के पाछे आवे अर्धक्वांरी,
गर्भ जून तै बाहर आके काया खिलज्या म्हारी ।।

पुरुष: बाण गंगा मैं स्याणी-३, डुबकी लगवाद्युँ रे,...गठजोड़े सै...

पुरुष: ढोलक बाजा सागे लेल्युं, नाचते गाते जावां,
मीठे मीठे प्यारे प्यारे माँ ने भजन सुणावां,

महिला: जै माता के नारे-३, तैं 'हर्ष' गुंजा दे रे,...गठजोड़े सै...

(तर्ज : आओ जी आओ म्हारा हिवड़े रा...)

ओढ़ों जी ओढ़ो मैया तारां जड़ी चून्दड़ी,
भगत उढ़ावे थाने ओढ़यां सरसी, ओSSS
चुनड़ी को मान बढ़ाया सरसी ।। टेर ।।

चाव चढ़्यो थो, मनड़े मांही, कद म्हारी दादी घर आसी,
चून्दड़ली जद, सिर पे सजेली, हिवड़ो गद् गद हो जासी ।। १ ।।

बड़ भागी म्हें, आंगणिये में, दादी जी का चरण पड़्या,
आज निहारे, झाँकी थारी, बेटा पोता खड़्या खड़्या ।। २ ।।

टाबरियां की, प्रेम निशानी, ओढ़्यां थाने आज सरे,
झर-झर म्हारी, आँखड़ल्या सुँ, 'हर्ष' भवानी नीर झरे ।। ३ ।।

(तर्ज : जब पीठ पे श्याम....)

जब सिर पे चुनरिया साजे,
तो छम-छम देखो नाचे,
ये शेर तेरा पीले रंग का ।। टेर ।।

जहाँ - जहाँ होता मेरी मैया का भजन,
वहाँ - वहाँ दादी जी का होवे आगमन,
जब ढोल नगाड़े बाजे, तो भगतों के संग नाचे,
ये शेर तेरा...।। १ ।।

जहाँ - जहाँ दादी जी का लगे दरबार,
वहाँ-वहाँ शेर तेरा रहता तैयार,
माँ सिंहासन पर साजे, तो ड्योढी पे ही विराजे,
ये शेर तेरा... ।। २ ।।

'हर्ष' भगत जब करते पुकार,
दुखड़े मिटाने दादी रहती तैयार,
जब माँ का इशारा पाये, तो पल में माँ को लाये,
ये शेर तेरा...।। ३ ।।

(तर्ज : ओंकारा...)

जय जगदम्बे मैया रे, जोर से बोलो भैया रे,
जै जै कारा - जै जै कारा,
लाल चुनरिया ओढ़ के आई देखो अष्ट भुजावाली, जै जै कारा,
ये ही लक्ष्मी, ये ही दुर्गा, ये ही सरस्वती काली,
जै जै कारा, जै जै कारा ऽऽऽऽऽ ।। टेर ।।

एक हाथ में गदा है माँ के दूजे खड़ग विराजे है,
शंख चक्र और कमल धनुष तेरी अष्ट भुजा में साजे है,
चण्डी ने त्रिशूल थाम के दानव दल को ललकारा ऽऽऽ ।। १ ।।

कर सोलह श्रृंगार भवानी बेटे के घर आई है,
तीज त्योहार दिवाली भगतों मैने आज मनाई है,
हलवे पूड़ी चने का मैंने आज लगाया भण्डाराऽऽऽ ।। २ ।।

'हर्ष' खुशी के इस मौके पर भक्तजनों को बुलवाया,
माता रानी के स्वागत में ये जगराता करवाया,
सिंह सवारी करके बैठी रुतबा माँ का है न्यारा ऽऽऽ।। ३ ।।

(तर्ज : पीतल की मेरी गगरी...)

दादीजी थारी ओढ़णी भगत थारा आज रंगाई जी ।। टेर ।।

झीणो झीणो जैपर सै माँ, थारो पोत मंगायो...मावड़ी,
रंगरेजा सूं लाल सुरंगो, भगतां आज रंगायो... मावडी,
दादीजी मन भावणी, भगत थारा आज रंगाई जी ।। १।।

साँचो-साँचो माल लगायो, ई चुनड़ी के मांय... मावड़ी,
एक बार थे ओढ़ ल्यो दादी, आसी थारे दाय... मावड़ी,
दादीजी बड़ी सोवणी, भगत थारा आज रंगाई जी ।। २।।

'हर्ष' करै मनवार भवानी, पीढे आन विराजो... मावड़ी,
घणे चाव सू ओढ़ के दादी, म्हारो मान बढ़ाद्यो... मावड़ी,
दादीजी मन मोहणी, भगत थारा आज रंगाई जी ।। ३।।

(तर्ज : म्हारी चन्द्र गवरजा....)

माँ झूला झूलो, झूलो झुलावे थारी लाडली ।। टेर ।।

थारे तांई आंगणिये में झूलो आज घलायो-२,
चान्दी रे पाटे पर दादी, थाने आज बिठायो जी ।। १।।

सावण मास सुहाणो आयो, रिमझिम बरसे पाणी,
झूले ऊपर आन बिराजी, सतियां की महाराणी जी ।। २।।

कर सोलह सिणगार भवानी, झूला झूलण आई,
धन धन दादी थारी लाडली, मेरो मान बढ़ाई जी ।। ३।।

बेटी से माँ वादो करल्यो, हर सावण में आस्यो,
'हर्ष' कह्वे हिवड़े की म्हारी, आकर आस पुरास्यो जी ।। ४।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर.....)

जिस पर तेरी किरपा होवे, वो ही है गुणवान,
ओ मेरी लक्ष्मी माता, सदा तेरे गुण मैं गाता ।
ज्ञानी के सन्मुख अज्ञानी पाता है सम्मान,
ओ मेरी लक्ष्मी माता - सदा तेरे गुण मैं गाता ।। टेर ।।

तुझको मनाके सारे घर से निकलते,
कितने जतन तुझे पाने को करते,
इस दुनिया में बनना चाहे हर कोई धनवान ।। १ ।।

महिमा बड़ी है तेरी हे महतारी,
राजा भी ध्याये तुझे बनके भिखारी,
तेरी दया से ही मिलता है जीवन में उत्थान ।। २ ।।

दुनियाँ में जिसके सिर पे माँ तेरा हाथ है,
बड़ी बड़ी ताकतें भी उसके ही साथ है,
'हर्ष' भवानी तू ही बनाती निर्बल को बलवान ।। ३ ।।

(तर्ज : अगर तुम मिल जाओ.....)

तू घर में आजा माँ मेरी दिवाली हो जाये,
तुम्हारे आगमन से घर मेरे खुशहाली आ जाये ।। टेर ।।

हमेशा स्नान करके मैं तेरा गुणगान करता हूँ,
चरण में आपके कुलदेवी हरदम ध्यान धरता हूँ,
दया कर जिन्दगी मेरी नसीबों वाली हो जाये ।। १ ।।

जहाँ पर वास है तेरा वहीँ पर रोशनी फैले,
भरे रहते हैं रत्नों से वहाँ पर थैले के थैले,
पड़े वीरान चेहरों पे भवानी लाली छा जाये ।। २ ।।

जिसे दरकार ना तेरी ना ऐसा आदमी देखा,
तेरे चरणों में झुकते 'हर्ष' ने हर आदमी देखा,
तेरी किरपा से निर्बल भी बड़ा बलशाली हो जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : डांडिया..)

मुखड़ा : मेरी मैया मेरे घर आई...

अन्तरा : फूलों सा चेहरा तेरा...

कइयां लांघ्यो तू सात समन्दर,
पूछे रावण बता अरे बंदर ।। टेर ।।

सुरसां सुं कइयां जान बचाई,
बैठी थी रस्ते में मुण्डो फैलाई,
कइयां निकल्यो रे घुस के तू अन्दर ।। १ ।।

कूद कूद सारी लंका जलाई,
विभिषण के घर आँच न आई,
कइयाँ बचग्यो बो राम जी को मंदिर ।। २ ।।

जै मन्ने होती थोड़ी सी शंका,
अइयाँ ना बलती सोने की लंका,
अरे बानर बड़ो तू धुरंधर ।। ३ ।।

भूल करी तने कोन्या पिछाणो,
'हर्ष' पड़्यो रे मन्ने पछताणो,
इब तो घबरा गयो दश-कन्दर ।। ४ ।।

(तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले....)

हे दुःख भंजन, मारूति नंदन, राम भक्त हनुमान,
भरोसा तेरा है ।। टेर ।।

माँ सीता का हरण हुआ, राम बड़े अकुलाये थे,
लाँघ समन्दर आप गये, माता की सुध लाये थे,
लाय संजीवन तुरन्त बचाये, लक्ष्मण जी के प्राण ।। १ ।।

जिसके सिर पे हाथ तेरा, भला उसे फिर डरना क्या,
जिसे भरोसा तेरा है, और उसे फिर करना क्या,
बाल ना बांका करने पाये, बड़े - बड़े तूफान ।। २ ।।

त्रेता राजा राम का था, द्वापर था गोपाला का,
हर युग डंका बजता रहा, माँ अंजनी के लाला का,
चारों युग प्रताप तुम्हारा, बजरंगी बलवान ।। ३ ।।

बलबुद्धि का दाता तू, मेरा भाग्य विधाता तू,
'हर्ष' पड़े जब भी विपदा, पल में दौड़ा आता तू,
भक्त शिरोमणी सदा बचाये, अपने भक्त की आन ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : दिल दिवाने का डोला...)

हे पवन पुत्र बजरंगी, तेरी किरपा पा जाऊँ,
मेरा जी करता है दौड़ के, सालासर आ जाऊँ ।। टेर ।।

पूरब मुख मंदिर तेरा, मेरे हनुमान का डेरा,
चान्दी के दरवाजों पर, श्री राम नाम का पहरा,
मेरे ईष्ट देव बालासां, तेरा दर्शन मैं पाऊँ ।। १ ।।

वो देशी घी के लड्डू, भर पेट चूरमा खाऊँ,
कुएँ का खारा पानी, पीकर हर रोग मिटाऊँ,
तेरे रोट का भोग मैं पाके, पुलकित मन हो जाऊँ ।। २ ।।

तेरी रत्न जड़ित मनुहारी, वो बड़ी अनोखी प्यारी,
झाँकी का दर्शन करके, हो जाऊँ गद्‌गद् भारी,
ये 'हर्ष' कहे तेरी पावन, चौखट पे झुक जाऊँ ।। ३ ।।

चेतावनी

(तर्ज : श्याम तेरी बंशी बजे धीरे धीरे...)

करले मिनख तेरे कालजे ने ठाडो,
उड़ जावेली चिड़कली सी लाडो ।। टेर ।।

बेटो तु जन्मयो खुशियाँ संजोई,
बेटी की बरियाँ आँख्याँ क्यूं रोई,
झूठो भरम थारे मनड़े से काडो ।। १ ।।

बेटे ने ऊँची शिक्षा दिलावे,
बेटी ने क्यूं तू घर में बिठावे,
खोदे मिनख तू खुद तेरो खाडो ।। २ ।।

बेटे ने देवे पूरी आजादी,
बेटी पे सारी बंदिश लगा दी,
चालसी रे कैयां बता तेरो गाडो ।। ३ ।।

दो दो कबीला बेटी चलावे,
बेटी ने अइयाँ क्यूं बिसरावे,
'हर्ष' तेरे कोई आसी ना आडो ।। ४ ।।

(तर्ज : इक तू जो मिला..)

अब कैसे करूं मैं तेरा शुक्रिया,
सहारा मुझे श्याम, तूने इतना दिया ।। टेर ।।

बिन तुम्हारे ना हालत सम्भलती मेरी,
सोई किस्मत कभी ना बदलती मेरी,
कोई कर ना सके, तूने जितना किया ।। १ ।।

दिल के पन्नों पे बाबा तेरा नाम है,
मेरी नस नस में अब तो मेरा श्याम है,
सोते उठते सदा, नाम तेरा लिया ।। २ ।।

है तमन्ना यही श्याम इतना करो,
हाथ यूहीं दया का हमेशा धरो,
'हर्ष' खाता हूँ मैं, बाबा तेरा दिया ।। ३ ।।

(तर्ज : तुझको पुकारे मेरा प्यार....)

अब तो कन्हैया लो सम्भाल,
आजा, दरपे दिवाना तेरा रो रहा ।। टेर ।।

जान के तुझको, अपना जहाँ में मेरी, आँख ये रोई,
मैं हूँ अकेला, तेरे सिवा तो मेरा, दूजा ना कोई,
आखिर हूँ तेरा मैं भी लाल ।। १ ।।

वश में था मेरे, तब तक परेशां तुझको, मैंने किया ना,
मजबूर इतना, आज से पहले कभी, मैं तो हुआ ना,
करले तू मेरा भी खयाल ।। २ ।।

देर भले हो, दर पे तुम्हारे, अन्धेर नहीं है,
किरपा तो होगी, 'हर्ष' जरा भी कोई, फेर नहीं है,
बन जाओ मेरे रखपाल ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आज से पहले आज से ज्यादा....)

आज से पहले, आज से ज्यादा, हसीं आज तक नहीं लगे,
मोहन प्यारे, इतने सुन्दर, कभी आज तक नहीं लगे ।। टेर ।।

मस्तक पे सोहे तेरे, पेंचा गजब का, जिसमें किलंगी लगी है,
आँखों में काजल काला, माथे पे टीका, हाथों में मुरली सजी है,
कान में कुण्डल, इतने प्यारे, कभी आज तक नहीं लगे ।। १ ।।

केशरिया लाल गुलाबी, फूलों के गजरे, गल में बैजन्ती पड़ी है,
हाथों में बाजु बंध, होठों की लाली, लागे ये दिलकश बड़ी है,
इतने सोणे, बंशी वाले, कभी आज तक नहीं लगे ।। २ ।।

जब से देखी ये तेरी, मतवारी मूरत, दिल तो बेकाबु हुआ है,
'हर्ष' हमारे दिल पे, ओ जादूगारे, कैसा ये जादू चला है,
इतने सुहाने, इन आँखों को, कभी आज तक नहीं लगे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : राधे तेरे चरणों की.....)

ऐ श्याम दयालु सुन, तेरे दरबार में आया हूँ,
मुझपे भी दया होगी, आस यही दिल में लाया हूँ ।। टेर ।।

दानी के दर पे सदा, भिक्षुक ही आता है,
दातार बड़े हो तुम, यही मैं सोचके आया हूँ ।। १ ।।

कहना क्या जरूरी है, तुम खुद ही समझते हो,
आँखों में मेरी पढ़लो, आज क्या कहने आया हूँ ।। २ ।।

सागर के किनारे से, प्यासा नहीं लौटूंगा,
भर दोगे मेरी गागर, यही विश्वास मैं लाया हूँ ।। ३ ।।

किरपा न बरसती तो, आते न सवाली यहाँ,
मैं 'हर्ष' दया पाने,श्याम तेरी शरण में आया हूँ ।। ४ ।।

(तर्ज : खुदाया वे...)

कन्हैया रे, हाय, दरपे खड़ा है ये गरीब रे,
आके संवारो कान्हा, मेरा नसीब रे ।। टेर ।।

आँखों में आंसु लाया, धोखे हजारों खाया,
टूटा हुआ दिल लेके, तेरी शरण में आया,
हालत हुई है मेरी, कितनी अजीब रे ।। १ ।।

ठोकर जहाँ में खाई, करते न क्यूं सुनाई,
जाना था अपना जिनको, उनसे मिली रूखाई,
बिकने चला हूँ आजा, मुझको खरीद रे ।। २ ।।

ऐसी भी क्या है देरी, समझो मेरी मजबूरी,
सायों से भी अब मेरी, देखो हुई है दूरी,
'हर्ष' खड़ा है अब तो, तेरे करीब रे ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल तोड़के हंसती हो मेरा...)

कहाँ छोड़के मैं जाऊँ तेरा द्वारा, कि तेरे बिना दिल ना लगे,
तेरी साँवली सुरतिया ने मारा, कि तेरे बिना दिल ना लगे ।। टेर ।।

मन मंदिर में तुम हो बसते, लूट लिया दिल हँसते हँसते,
तेरे वास्ते मैं छोडूं जग सारा, कि तेरे बिना दिल ना लगे ।। १ ।।

भोली सूरत शोख अदायें, इस चितवन पे मर-मर जायें,
बहे आँसुओं की कल कल धारा, कि तेरे बिना दिल ना लगे ।। २ ।।

जबसे देखा साँवल मुखड़ा, देख लिया ज्यूं चान्द का टुकड़ा,
तुझे देखते ही दिल तुझे हारा, कि तेरे बिना दिल ना लगे ।। ३ ।।

श्याम सलोना रूप निहारा, हो गया कुरबां 'हर्ष' तुम्हारा,
मैंने आज तुझपे तन मन वारा, कि तेरे बिना दिल ना लगे ।। ४ ।।

(तर्ज : बिन फेरे हम तेरे.....)

किया नहीं श्रृंगार तो क्या, आया नहीं सौ बार तो क्या,
यादों में तेरी रहता हूँ, भावों से तुझे कहता हूं,
हो गये हम तेरे-२ ।। टेर ।।

मेरे कुल में आज तलक भी, तुझको किसी ने ना पूजा,
गूंज रहा तेरे जयकारों से, हर गली अब हर कूंचा,
चरचे सुन कर मैं आया, बाबा तेरा बन आया,
हो गये... ।। १ ।।

पूजा अर्चन ना जानूं मैं, दिल ये किया तुझको अर्पण,
मन के इस मंदिर में बाबा, करता हूँ तेरा दर्शन,
दीपक कभी जलाया ना, लेकिन तुझे भुलाया ना,
हो गये... ।। २ ।।

पहली बार शरण जो आया, मुझको थामा था तुमने,
'हर्ष' तुम्हीं को अपना सब कुछ, अब तो माना है हमने,
लायक ना हैं हम तेरे, लेकिन पायक है तेरे,
हो गये... ।। ३ ।।

(तर्ज : हारे का तू है सहारा...)

किस्मत के मारे तू क्यूं घबराता है,
खाटू के मंदिर में क्यूं नहीं आता है,
दरबार है ये सच्चा, जाने बच्चा बच्चा ।। टेर ।।

ज्यादा पुरानी नहीं है कहानी,
कलयुग में दुनिया है इसकी दिवानी,
जिसने मन साफ किया, उसको इंसाफ दिया ।। १।।

जिसने भी श्रद्धा से सर को झुकाया,
मन की मुरादें वो इस दर से पाया,
बाँझन को लाल मिला, निर्धन को माल मिला ।। २।।

पहली दफा चौखट पे जो आता,
जनमों जनम का जुड़ जाता नाता,
ये 'हर्ष' हमारा है, हारे का सहारा है ।। ३।।

(तर्ज : दिल ऐसा किसी ने मेरा तोड़ा....)

कुछ ऐसे हवा के आये झोंके,
मिले भी ना संभलने के मौके,
श्याम मुझे जीवन में, मिले हैं बता क्यूं धोखे ।। टेर ।।

अपनों से हुई है ये दूरियाँ,
मैं किससे कहुं मजबूरियाँ,
दु:खों में आके कोई भी ना टोके ।। १ ।।

निश्चल मन इक मेरे पास है,
बस तुझसे ही अब तो आस है,
बरबादियों को बाबा तूही रोके ।। २ ।।

दुनिया में तो धोखे खा गया,
अब तेरी शरण लो आ गया,
खड़ा है 'हर्ष' सपने संजोके ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं ना भूलूँगा...)

कुछ ना बोलूंगा, मुँह ना खोलूंगा,
समझे तू अंसुवन की भाषा, बस मैं रो लूंगा ।। टेर ।।

बड़ी मनुहार करी-२, मगर तू ना आया,
हार कर नजराना-२, मैं आँसू का लाया,
आंसू की ये भेंट मेरी स्वीकार करो बाबा,
चरण तुम्हारे इस धारा से आज मैं धो दूंगा ।। १।।

भगत के आँसू क्या-२, तू श्याम सह पायेगा,
गले से लगाये बिन-२, क्या तू रह पायेगा,
समझ सके तो समझ ले मेरी मन पीड़ा बाबा,
मैं तो बस रो करके अपना दर्द दिखाऊंगा ।। २।।

समझना जो चाहो-२, तो आँखें पढ़ लेना,
अगर तुम जो चाहो-२, तो किरपा कर देना,
आँखों में सैलाब लिए ये 'हर्ष' खड़ा बाबा,
चौखट से इन्कार मिला तो वो भी सह लूंगा ।। ३।।

(तर्ज : म्हारा श्याम रंगीला....)

कुण आसी रे कागा, बतलादे बैठ्यो क्युं मुंडेर पे ।। टेर ।।

कई दिनां सुं हिचकी आवे, मन म्हारो भरमावे,
बाबा जी ने याद करूं म्हारी, हिचकी बंद हो जावे जी ।। १ ।।

सोऊँ तो सुपणे में म्हाने, सेठ साँवरो दीखे,
म्हारी आस पुरादे कागा, सेवक बाट उडीके जी ।। २ ।।

बारी बारी बैरण फड़के, आँखड़ली या म्हारी,
बेगा आओ श्याम धणी म्हाने, याद सतावे थारी जी ।। ३ ।।

जद म्हारो बाबो घर आसी तो, तेरा लाड़ लड़ास्युँ,
'हर्ष' कह्वे हीरा मोत्यां सु, तेरी पाँख मढ़ास्युँ जी ।। ४ ।।

(तर्ज : दीनानाथ मेरी बात...)

खाटू श्याम आठुं याम माला फेरां थारी जी,
टाबरिया नादान हाँ म्हे, सुध लीज्यो म्हारी जी ।। टेर ।।

थारो ही सहारो म्हाने थारो ही आधार है,
थारे ही भरोसे बाबा म्हारो परिवार है,
पल्लो थारो थामे बैठया थारा ही पुजारी जी ।। १ ।।

हिवड़े सुं बाबा म्हारी भूँला थे भुलाय द्यो,
शरणागत हाँ बाबा म्हाने कालजे लगाय ल्यो,
म्हें हाँ भोला भाला नाथ थे हो लीलाधारी जी ।। २ ।।

पूजा विधि जाणा कोनी बस थाने ध्यावाँ हाँ,
मीठा मीठा भजनां सु 'हर्ष' रिझावाँ हाँ,
भजनां को प्रेमी म्हारो साँवरो बिहारी जी ।। ३ ।।

(तर्ज : ज्योति कलश छलके....)

खोल जरा पलकें-२,
श्याम विरह में, नैनों के मोती, छल छल छल छलकेSSS ।। टेर ।।

दूर मैं तुझसे रह ना पाया, आस दरश की लेके आया,
द्वार तेरे चलके SSSS।। १ ।।

नाम का तेरे, मैं हूँ पागल, याद में तेरी गम का बादल,
अँखियों से ढलके SSSS।। २ ।।

तीर नजर के तूने मारे, मीठी मीठी टीस हमारे,
मुखड़े पे झलके SSSS ।। ३ ।।

श्याम खड़े हो, अपना बनाके, 'हर्ष' भगत को यू तरसा के,
होले से मुल्के SSSS ।। ४ ।।

(तर्ज : डोन्ट से अलविदा)

गजब का निखार है, क्या श्रृंगार है,
लगता यूँ साँवरे, आई बहार है,
देखा जो गौर से, दिल धड़का जोर से,
जादू सा चल गया, ले गया दिल मेरा-४ ।। टेर ।।

तिरछी अदाओं से, करो ना इशारा, नजरों को भा गया है, प्यारा नजारा, देखुं जिधर मैं, उधर तू ही तू है, सिवा तेरे कुछ भी दिखता नहीं है, आज तक मैं बड़ा था तनहा, अब कोई मिल गया है अपना जिन्दगी खुशनुमा हो गई, यूं लगे देखुं कोई सपना ।। १ ।।

नशा तेरे रूप का तो चढ़ने लगा है, कैसा ये खुमार मेरा, बढ़ने लगा है, सुरुरे मोहब्बत, आँखों में छाया, जुलम तूने इतना, मुझपे क्युं ढाया, साँवली सूरत मतवारी, मोहिनी मूरत ये प्यारी, होश खो बैठा हूँ कान्हा, देखके चितवन ये न्यारी ।। २ ।।

निगाहों के खंजर यूं, दिल पे न छोड़ो, अदाओं की शोखीयाँ तुम, कहीं ओर मोड़ो, तेरी आशिकी में, हम मर मिटे हैं, तेरे प्यार में श्याम, लुट ही चुके हैं, जहाँ देखें तुझे ही देखे, तमन्ना आज दिल की कहदें, 'हर्ष' तुम मांग के तो देखो, जान भी हँसते हंसते दे दें ।। ३ ।।

(तर्ज : तुम्हीं मेरे मन्दिर...)

गलत और सही का भेद न जाना,
मेरे श्याम सुन्दर मुझे तू निभाना ।। टेर ।।

दिखाई जो देता उसे मैं ना मानूं,
कानों सुनी को बाबा सच्चा मैं जानूं,
अगर हो सके तो रस्ता दिखाना ।। १ ।।

सच बोलना मुझे आता नहीं है,
झूठ दयालु तुझे भाता नहीं है,
भले और बुरे का मर्म समझाना ।। २ ।।

छलनी में पानी सदा भर रहा हूँ,
मुझे ना खबर है मैं क्या कर रहा हूँ,
मुझे क्या है करना जरा ये बताना ।। ३ ।।

बुरा ना किया पर भुलाया गया हूँ,
निर्बल समझ के बाबा गिराया गया हूँ,
सहारा जरा देके 'हर्ष' को उठाना ।। ४ ।।

(तर्ज : तेरे मस्त मस्त दो नैन....)

गाल गुलाबी तेरे, होंठ रसीले,
नैनों में डूबा जाऊँ, नैन नशीले-२,
तेरी मस्त मस्त सी चाल, बुरा दिल का कर गई हाल,
बुरा दिल का कर गई हाल, तेरी मस्त मस्त सी चाल ।। टेर ।।

होठों पे बांसुरी, तन पे पिताम्बर, सोहे तेरे सोहे, सोहे तेरे,
मुरली की धुन तेरी, मन को नीलाम्बर, मोहे मेरे मोहे, मोहे मेरे,
बाँके बिहारी तेरी, चितवन ये बाँकी,
दिल में बसी है मेरे, प्यारी सी झाँकी-२ ।। १ ।।

मनवा यै बैरी तुझे, देखन को मोहना, तरसे हाय तरसे, तरसे हाय,
आँखों के रस्ते से, बदरी ये प्यार की, बरसे हाय बरसे, बरसे हाय,
नीन्दों में देखता हूँ, सपने मैं तेरे,
चेहरा ये घूमता है, आँखों में मेरे-२ ।। २ ।।

रूप का चलाया ऐसा, तुमने ओ साँवरे, जादू हाय जादू, जादू हाय,
दिल ना रहा है मेरे, अब तो ओ बावरे, काबू हाय काबू, काबू हाय,
होश हवाश सारे, मैं खो चुका हूँ,
'हर्ष' दिवाना तेरा, मैं हो चुका हूँ-२।। ३ ।।

(तर्ज : घुँघरू की तरह....)

घुट घुट के यहाँ, हर पल ही जिया हूँ मैं
कभी इस दर पे, कभी उस दर पे, भटका ही किया हूँ मैं ।। टेर ।।

मैं उठने चला तो गिर ही गया,
दुनिया में तमाशा बन ही गयाऽऽऽ,
कभी अपनों से, कभी गैरों से,
छलता ही रहा हूँ मैं ।। १ ।।

जिनको भी यहाँ मैंने फूल दिये,
बदले में मुझे जग ने काँटे दिएऽऽऽ,
कभी इस डाली, कभी उस डाली,
अटका ही रहा हूँ मैं ।। २ ।।

ऐ श्याम तेरी चौखट पे खड़ा,
लो 'हर्ष' शरण में आन पड़ा,
मुझे अपना ले, तुझको बाबा,
अपना ही चुका हूँ मैं ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे गुलाल...)

चंग बाजे रे चारू मेर, ल्यो आय गयो फागणियो,
गूंजे रे भजनां की टेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। टेर ।।

कार्तिक शुक्ला ग्यारस पाछे, गली गली में सेवक नाचे,
आई नाचण की बेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। १।।

घर घर किर्तन होवण लाग्या, खाटू जावण का दिन आग्या,
होल्यो थे भगतां के लेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। २।।

श्याम मगन है दुनिया सारी, श्याम निशान की करके त्यारी,
बेगा उठाल्यो कांई देर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। ३।।

हेलो मार के श्याम बुलावे, 'हर्ष' श्याम की गाड़ी जावे,
पाछे चालोगा कद फेर, ल्यो आय गयो फागणियो ।। ४।।

(तर्ज : चांद जैसे मुखड़े पे बिन्दिया...)

दोहा : ये पूनम का चन्द्रमा, करलो आज दीदार ।
सजके बैठा सामने, साँवरिया सरकार ।।

चाँद जैसे मुखड़े को जिसने निहारा,
नहीं भूलेगा मेरे श्याम ''ये नजारा''-२,
प्यारे तेरा जलवा है ऐसा ''जादूगारा''-२
नहीं भूलेगा मेरे श्याम ''ये नजारा''-२ ।। टेर ।।

रतन जड़ित ये मुकुट सलोने शीश पे सोहे तेरे,
मोर पंखुड़ी लगी किलंगी मन को मोहे मेरे,
हीरा ऐसे चमक रहा है जैसे ''सितारा''-२ ।। १ ।।

बांकी अदायें बांके तेरी उस पर चाल नवाबी,
फूलों की पंखुड़ियों जैसे लब हैं लाल गुलाबी,
तुमको प्यारे आज बतादे किसने ''संवारा''-२ ।। २ ।।

काजल वाली श्याम तुम्हारी ये कजरारी आँखे,
मानो जैसे बोल पड़ेगी 'हर्ष' करेगी बातें,
फूट रहा है प्रेम का देखो, कोई ''फव्वारा''-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : सिर पर टोपी लाल...)

चालो भगतो बाट उडीके, श्याम धणी दातार,
बुलावे खाटू में ।। टेर ।।

फागण को मेलो आयो, बाबा को हेलो आयो, सुणले रे भायला,
बेगो सो करले त्यारी, मतना लगावे देरी, सोचे के बावला,
भर देसी भण्डार तेरा यो सांवरियो सरकार ।।
बुलावे खाटू में... ।। १ ।।

मेलो भर्‌यो है भारी, ध्यावै है दुनिया सारी, श्याम सरकार ने,
मंशा पुरावे भारी, विपदा मिटेगी सारी, श्याम दरबार मे,
मतना करे उंवार, भायला जाके हाथ पसार ।।
बुलावे खाटू में... ।। २ ।।

मित्र मण्डल की गाडी, हावड़ा में आके लागी, बैठ जरा चालके,
'हर्ष' पजामा चोला, पेटी में सोणा सोणा, लेले तू घाल के,
आयो है फरमान, उठाले हाथां माहीं निशान ।।
बुलावे खाटू में...।। ३ ।।

(तर्ज : ओ रे पिया...)

चोरी हुआ, हाय मेरा जिया,
दिल को चुराया, चुपके से तूने,
बिन तेरे लागे, सब सूने सूने,
जादूगारे इसके नैना, बचके रहना-२ ।। टेर ।।

साँवरे सलोने तूने मुसका के दिल ले लिया,
तिरछी निगाहों का, दिल पे ये तीर चल गया,
वश में नहीं है, अब ये हमारे, घायल हुए हैं, सेवक ये सारे,
जादूगारे इसके नैना, बचके रहना-२।। १ ।।

मोहिनी अदायें तेरी उसपे संवरना तेरा,
इठला के चलना थोड़ा सा इतरना तेरा,
सांसों में अब तो, तुम ही बसे हो, चाहत की डोरी, कस के कसे हो
जादूगारे इसके नैना, बचके रहना-२।। २ ।।

ढुँढो जरा ढुढों जरा दिल मेरा कहाँ खो गया,
'हर्ष' भगत तेरा साँवरे दिवाना हो गया,
मन को लुभाए, प्यारा सा मंजर, चुभ सा गया है, नैनों का खंजर,
जादूगारे इसके नैना, बचके रहना-२।। ३ ।।

(तर्ज : श्याम थारी ओल्यूं आवे जी...)

छमा छम घुँघरूं बाजे जी,
अजी, ढुमक ढुमक कर बाबा थारा सेवक नाचे जी ।। टेर ।।

रतन सिंहासन आप विराजो, खाटू का सरदार, साँवरा...
केशरियो टीको माथे पर गल बैजन्ति हार,
कानां में थारे कुण्डल साजे जी ।। १ ।।

चम्पा जूही और मोगरा गजरां की भरमार,साँवरा...
पचरंगी बागे पर होवे इत्तर की बौछार,
शीश थारे मुकुट विराजे जी ।। २ ।।

सुरंगा सी झाँकी ने बाबा निरखां बारम्बार, साँवरा...
जादुगारी ई चितवन पर 'हर्ष' भगत बलिहार,
म्हाने तो सुपणो सो लागे जी ।। ३ ।।

(तर्ज : फिजा भी है जवाँ जवाँ)

छुपे हुए हो तुम कहाँ, नहीं कोई अता पता,
मैं ढूँढता हूँ साँवरे, कहाँ मिलोगे ये बता ।। टेर ।।

पुकारता रहा तुझे, दुआ सुनोगे कब मेरी,
जरा सा ये बता मुझे, दया मिलेगी कब तेरी,
कहीं मैं आज रो पड़ुं, न और अब मुझे सता ।। १ ।।

ये तेरे मेरे बीच की, मिटेगी कैसे दूरीयाँ,
न जाने ये जुदाई की, कटेगी कैसे बेडियाँ,
ये फासले बने हैं क्यूं, तु आके अब इन्हें मिटा ।। २ ।।

जिया मे मेरे जल रही, दीदार की ये आग है,
जुबां ये मेरी गा रही, विरह की सूनी राग है,
ये 'हर्ष' घुट रहा तेरा, तु आके आग ये बुझा ।। ३ ।।

(तर्ज : निक्के निक्के सोणे सोणे)

छोटा छोटा चूरमे का लाडूड़ा बणा,
खाटू हाले साँवरे ने हाथां सु जिमा,
म्हारे बाबा जी को भोग है पुराणोऽऽऽऽ
ईं चूरमे पे लार टपके ।। टेर ।।

चूरमे ने देख म्हारो साँवरो हँसे,
चूरमे में बाबा जी की आत्मा बसे,
म्हारे साँवरे की रूच थे पिछाणो ऽऽऽऽ, ईं चूरमे ...।। १ ।।

सवा किलो ले जा चाहे सवामणी कर,
रुच रुच जीमे बाबो थाली भर भर,
ईंके चूरमे को भोग ही लगाणो ऽऽऽऽ, ईं चूरमे...।। २ ।।

चूरमे ने बांट तु सम्भाल के भगत,
पगां में पड़े तो होसी श्याम के दरद,
थाने चूरमे को मान है बढ़ाणो ऽऽऽऽ, ईं चूरमे ...।। ३ ।।

चाहे तु खुवा ले इने बाजरा का रोट,
राजी होवे देखके यो चूरमे को पोट,
यो तो चूरमे को 'हर्ष' दिवानोऽऽऽऽ, ईं चूरमे ...।। ४ ।।

(तर्ज : जब कोई बात बिगड़ जाये...)

जब तु श्याम संवर जाये, होले से तु मुस्काये,
मचले अरमान मेरे, ओ साँवरे,
जब तेरी जुल्फे लहराये, गालो को तेरे सहलाये,
मचले अरमान मेरे, ओ साँवरे... ।। टेर ।।

श्याम तेरा ये भोलापन, भोली सी तेरी चितवन,
कैसे तुमसे बयां करुं, बेकाबू हो जाता मन,
जब थोड़ा तु इतराये, दिल पे छुरियां चल जाये ।। १ ।।

तेरे गले बैजन्ती हार, सिर मोर मुकुट सरकार,
सूरत ये निहारूँ तो, खो देता हूँ मैं करार,
जब तु श्याम निखर जाये, नीन्दे मेरी उड़ जाये ।। २ ।।

सुन्दर सा मुखड़ा तेरा, घायल कर गया मन मेरा,
'हर्ष' कहें इस दुनिया में, कोई ना सानी तेरा,
जब जब श्याम नजर आये, तेरा जादू चल जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : राम तेरी गंगा मैली....)

दोहा : पड़ा हूँ बाबा शरण तिहारी,
हमारी सुध लो जरा बिहारी ।
मैं चाहूँ दाता दया तुम्हारी,
मैं चाहूँ दाता दया तुम्हारी ।।

जिसने शरण ली, वो तो कभी भी ना रोते,
श्याम फिर ये आँखे मेरी रो पड़ी, बोल दे क्यूं आज तेरे होते ।।

दर्द छुपाके दिल में मेरे, तेरे दर पे आया,
छलक पड़े ये आँख के आँसु, इनको रोक न पाया,
ऐसा तुझमें क्या है दाता, जो भी तेरे द्वारे आता,
जो भी तुझको कहने आता, पर वो कह नहीं पाता,
कहते ये आँसु, तेरे चरणों को धोते-धोते ।। १ ।।

मैंने तुझको आज तलक भी, ना पूजा ना ध्याया,
तेरी दया के चरचे सुनके, शरण तेरी मैं आया,
सुनली संतों की जुबानी, बाबा तेरी ये कहानी,
तेरी आदत है पुरानी, पीड़ा निर्बल की मिटानी,
पूछे ये आँखे, तेरे दर को भिगोते-भिगोते ।। २ ।।

चुप क्युं बैठे हो बतलाओ, देखो हाल हमारा,
नजर उठाओ शरण पड़ा है, बाबा 'हर्ष' तुम्हारा,
तू ही कश्ती किनारा, तू ही माझी है हमारा,
दे दे मुझको भी सहारा, मैंने तुझको है पुकारा,
थक सा गया हूँ, मैं दुखड़ों को ढ़ोते-ढ़ोते ।। ३ ।।

दोहा : मजबूर हूँ मगर मगरुर मैं नहीं ।
ऐ श्याम तेरी चौखट से दूर मैं नहीं ।।

(तर्ज : सारे रिश्ते नाते....)

झूठे जग से नाता मैं तोड़ के आ गया,
ऐ श्याम तेरे प्यार में सब छोड़ के आ गया ।। टेर ।।

साँचा है नाम तेरा, साँचा दरबार है,
तेरे ही भरोसे श्याम, मेरा परिवार है,
होऽऽऽ, स्वारथ के रिश्तों से मुख मोड़के आ गया ।। १ ।।

सुख देना दुख देना ये तो तेरे हाथ है,
सब है गवारा मुझे जब तेरा साथ है,
होऽऽऽ, बिगड़े नसीबा पीछे छोड़के आ गया ।। २ ।।

'हर्ष' कभी ना भुलुं तेरे उपकार को,
गले से लगाया तूने मेरे परिवार को,
होऽऽऽ, जन्मों का नाता तुम संग जोड़ के आ गया ।। ३ ।।

(तर्ज : ओल्यूं आवे जी...)

टाबर तरसे जी श्याम थारा टाबर तरसे जी,
म्हारी आँखड़ल्याँ सुं सावण भादो, झर झर बरसे जी ।। टेर ।।

थारी याद सताई जद यो, मनड़ो भयो उदास,
हिवड़े मांही आज जगी जी, थारे दरश री आस,
म्हारा श्याम मिजाजी थाने देख्याँ, हिवड़ो हरखे जी ।। १ ।।

पहल्यां रूला कर पाछे आणो, थारी याही पिछाण,
भगत बुलावे बेगा आओ, टाबर अपणो जाण,
म्हारा, नैण निगोड़ा रस्तो थारो, पल पल निरखे जी ।। २ ।।

काली कोसां आप बिराजो, कैंया मिलणो होय,
'हर्ष' भगत थारी याद में बाबा, घुट घुट करके रोय,
बाबा, बालकियाँ पर महर की बरखा, कद सी बरसे जी ।। ३ ।।

(तर्ज : तुम मुझे युं भुला न पाओगे.....)

तुम मुझे क्या, यूहीं रूलाओगे,
क्या कभी भी, दयालु दोष मेरे,
दिल से तुम, भुला न पाओगे ।। टेर ।।

तूने अजमिल का बेड़ा पार किया,
गणिका - गिद्ध का उद्धार किया,
मैं भी चरणों में श्याम तेरे पड़ा,
क्या मुझे तुम, गले लगाओगे ।। १ ।।

माना दुनिया के काम आ न सका,
लेकिन दिल से तुझे भुला न सका,
मैं तो रोया हूँ तेरी यादों में,
क्या मुझे तुम, कभी हंसाओगे ।। २ ।।

क्या करेगा तु गिनके पाप मेरे,
'हर्ष' काबिल नहीं है श्याम तेरे,
लेकिन मन में बसी छवि है तेरी,
कान्हा इसे तुम, मिटा ना पाओगे ।। ३ ।।

(तर्ज : कैसे बताएं कि तुमको चाहें..)

तेरी अदायें, दिल को लुभाये, कैसे तुझे समझाए,
अगन जिया में, कैसी लगी है, तुमको बता ना पायें,
ओ साँवरे - ओ साँवरे -२ ।। टेर ।।

मिलके भी, मन ना भरे, तुमसे ना जाने क्युं,
रहने ना, पाऊँ परे, तुमसे ना जाने क्युं,
मिलने को, फिर दिल करे, तुमसे ना जाने क्युं,
रहने ना, पाऊँ परे, तुमसे ना जाने क्युं ।। तेरी अदायें...।। १ ।।

अदाओं ने तेरी देखो जादू कर दिया, जगी मेरे दिल में आरजू,
हुआ तेरे जादू भरे नैनों पे फिदा, दिया तुमने दिल को है सुकुं,
दम जोश खोके भी, मदहोश होके भी, मैं होश खोके भी,
गिरता नहीं हूँ थामे, तुम जो खड़े, मुझको ना जाने क्यूं,
रहने ना, पाऊँ परे, तुमसे ना जाने क्युं ।। तेरी अदायें...।। २ ।।

निगाहों के खंजर 'हर्ष' दिल पे सह गया, कान्हा तुमको अपना जान के,
खड़ा है दिवाना अब तो देखो गौर से, आया दरपे अपना मान के,
तू पास होता है, आभास होता है, अहसास होता है,
मुझको भला, लागे तू मुझसे मिले, मुझको ना जाने क्यूं,
रहने ना, पाऊँ परे, तुमसे ना जाने क्युं ।। तेरी अदायें...।। ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी ...)

तेरी माला जपुं साँझ सवेरे,
नन्द लाल साँवरिया मेरे ।। टेर ।।

जिस दिन से अलख जगाई,
जीवन में लाली छाई,
अब दूर हुए हैं अंधेरे ।। १ ।।

मैं जबसे शरण में आया,
तेरी किरपा का सुख पाया,
दिन मेरे हुए हैं सुनहरे ।। २ ।।

अपनों ने जो आँख चुराई,
तूने पकड़ी मेरी कलाई,
मोपे लाखों है अहसां तेरे ।। ३ ।।

तेरे बच्चे अरज गुजारे,
तुम रहना साथ हमारे,
देना चरणों में 'हर्ष' बसेरे ।। ४ ।।

(तर्ज : करां तेरियां मैं मिन्नता)

तेरी याद में ये दिल मेरा रो दिया, इक बर आजा साँवरे,
काहे आसुंओं में मुझको भिगो दिया, इक बर आजा साँवरे ।। टेर ।।

दिल में ये याद तेरी जिस पल उतार ली,
उस पल न जाने कितनी मुश्किलें उधार ली,
मीठी याद की क्यूं माला तू पिरो गया,
इक बर आजा साँवरे ।। २ ।।

दर्शन की आस लिये दिल ये पुकारता,
रह रह के चौखट बड़ी आशा से निहारता,
कैसी शूल मेरे दिल में चुभो गया,
इक बर आजा साँवरे ।। ३ ।।

दिल देके दिल लेना प्रेमियों की रीत है,
प्रेमी के प्यार में मिटना हार के भी जीत है,
'हर्ष' प्रीत के तू सपने संजो गया,
इक बर आजा साँवरे ।। ४ ।।

(तर्ज : टूटे हुए ख्वाबों ने....)

तेरे मन में श्याम बसे, कहाँ खोजन जाता है,
अंदर, ही ढूँढ इसे, क्यूं ठोकरें खाता है ।। टेर ।।

तेरा मन मथुरा काशी, घट में खाटू वासी,
हृदय ही धाम तेरा, ''बन बैठा सन्यासी''-२
भीतर तू झाँक जरा, क्या नजर ये आता है ।। १ ।।

ना देखे पराया धन, नारी का मान करे,
तू झूठ कपट तजके, ''बाबा का ध्यान धरे''-२
जब मन इतना निर्मल, फिर क्यूं घबराता है ।। २ ।।

तूने एक शरण ले ली, अब किसकी शरण ढूँढे,
नाहक ही 'हर्ष' यहाँ, ''मंदिर मंदिर पूजे''-२
ये श्याम तुम्हारा है, काहे भरमाता है ।। ३ ।।

(राग रचयिता :- रजनीश शर्मा , मो.: 09416045984)

दर्द बड़े हैं बाबा, किसको दिखाऊँ रे,
सुनता नहीं है कोई, किसको सुनाऊँ रे,
तू भी ना सुने तो-२, सुनेगा कौन रे,
साँवरे मेरे दुखड़े हरेगा कौन रे ।। टेर ।।

पापों की मेरे मुझे, युं ना सजा दे तू,
नादानियों को मेरी, दिल से भुला दे तू,
गोदी में मुझको-२, भरेगा कौन रे ।। १ ।।

भूल हुई है कैसी, समझ ना पाऊँ मैं,
जिसकी वजह से बाबा, दुख ऐसे पाऊं मैं,
माफ मुझे फिर-२, करेगा कौन रे ।। २ ।।

मजबूर होके मैने, तुझको पुकारा,
हारे के सहारे आजा, बनके सहारा,
'हर्ष' सहारा मुझे-२, देगा कौन रे ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल चीज क्या है....)

दिल चीर करके श्याम मेरा, देखले जरा,
लिखा हुआ है नाम तेरा, देखले जरा ।। टेर ।।

भरता नहीं मैं साँवरे, तेरी बंदगी का दम,
कुरबां है तुझपे जान मेरी, देखले जरा ।। १ ।।

माना नहीं हूँ आपके, काबिल मैं ऐ हुजूर,
चरणों में फिर भी हूँ मैं पड़ा, देखले जरा ।। २ ।।

इतना मिला है आपसे, कुछ भी वो कम नहीं,
करजा है दिल पे श्याम तेरा, देखले जरा ।। ३ ।।

थकती नहीं जुबान ये, ले लेके तेरा नाम,
इक बार अपने 'हर्ष' को, देखले जरा ।। ४ ।।

देर ना हो जाये कहीं देर ना हो जाये
आजा रे, धीरज छूटा जाये... ।।

पिता को गाँव जाना था बुलाया बेटी करमा को,
समय पे भोग तुम लगा देना मेरे मोहन को,
साँझ ढलते बनाई खिचड़ी नन्हीं बाला ने,
मगर हठ ठान ली थी नन्द जी के लाला ने,
लाख विनती करी पर भोग उसने ना खाया,
हताश हो करमा ने ये साँवरे से फरमाया,
हुकम बाबा का है कि आज तुझको मैं जिमाऊँगी,
अगर तू ना खाये तो मैं भी भूखी ही सो जाऊंगी ।।

दोहा : भगत के विश्वास से दिल साँवरे का डोल गया ।
जरा जल्दी में हूँ जाते जाते ये रानियों से बोल गया ।।

क्या:– देर ना हो जाये कहीं देर ना हो जाये.... ।। १ ।।

कहा नरसी भगत ने बेटी नानी बाई से,
भरेगा भात मेरा साँवरा सेठाई से,
बन करके भाई धर्म का वो आयेगा,
नगर अंजार पे धन की बरखा करायेगा,
ससुराल के तानों को सुन परेशान हो गई नानी,
डूब कर सरोवर में अपनी जान देने की ठानी,

भरोसा धर्म के भाई का करके देख लिया,
सगा तो सगा ही होता है आज मैंने जान लिया ।।

दोहा : सुन कर के करुण पुकार पसीना मोहन को आया ।
चल रुकमण जल्दी चल नटवर ने युं फरमाया ।।

वरना:- देर ना हो जाये कहीं देर ना हो जाये... ।। २ ।।

बाबा को शयन करा पट बंद कर दिये पुजारी ने,
तभी आकर के दस्तक दी एक दरबारी ने,
नियम के मुताबिक पुजारी ने पट को ना खोला,
नसीब में तेरा दर्शन नहीं मजबूर हो खुद से ही वो बोला,
जरा ठहरो तब श्याम बहादुर ने उसे पुकारा है,
ना जा तू हार कर हारे का ये सहारा है,
मिलेगा दर्शन तुझे भी ये देव है दातारी,
उठाई मोर छड़ी और ताले पे झट से दे मारी ।।

दोहा : छड़ी की मार से 'हर्ष' तालों को खुलते देखा ।
नियम दरबार का भगत के वास्ते बदलते देखा ।।

क्यों :- देर ना हो जाये कहीं देर ना हो जाये... ।। ३ ।।

(तर्ज : देख सकता हूँ मैं...)

देख सकता है श्याम कुछ भी होते हुए,
नहीं ये नहीं देख सकता हमें रोते हुए ।। टेर ।।

बेवजह इनको रोकर दिखाना नहीं-२,
दुख सताये अगर तुम छुपाना नहीं,
तेरा अपना है कोई बेगाना नहीं,
कैसी चिन्ता तुझे इसके होते हुए ।। १ ।।

जब कभी गम का बादल नजर आयेगा-२,
तब बता बचके बंदे किधर जायेगा,
तेरा आंसु दिवाने असर लायेगा,
रात ढल जायेगी सुख से सोते हुए ।। २ ।।

दिल में तेरे जो तूफां मचल जायेगा-२,
दर्द बन करके आंसु निकल जायेगा,
साँवरे को पता पल में चल जायेगा,
'हर्ष' आयेगा सुध तेरी लेते हुए ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल खो गया तेरी और...)

देखा तुझे खो गया, तुझी में,
दिल ये मेरा, बस गया तुम्हीं में,
जादू तेरा कान्हा, ऐसा चला है,
दिल पे नहीं कोई जोर, कोई जोर ।। टेर ।।

दिलकश सलोनी सूरत तुम्हारी, वश में नहीं है ये जिया,
मदहोशी छाई, कोई बतादे, ये क्या मुझे हो गया,
चाहूँ मगर खुद को, रोक ना पाऊं ।। दिल पे नहीं...।। १ ।।

नीली सी आँखे, करती है बाते, जाने क्या मुझसे बोलती,
चुपके से मेरे, भाव जिगर के, नजरों से अपनी तोलती,
मैं क्या करूँ बाबा, कसम से कहूँ ये ।। दिल पे नहीं...।। २ ।।

चाहने वाले, दुनिया में तेरे, लाखों पड़े हैं साँवरे,
चढ़ी है खुमारी, भगतों पे तेरी, नाचे हैं बन के बावरे,
नशा ये तुम्हारा, 'हर्ष' पे चढ़ा है ।। दिल पे नहीं...।। ३ ।।

(तर्ज : दुनिया में तेरा है बड़ा....)

दुनिया में पावन, है तेरा धाम,
हारे का साथी, है मेरा श्याम,
मैं हार के दर पे आया-२, दे दे दया का दान,
श्याम नहीं तो तज दूंगा तेरी, चौखट पे मैं प्राण ।। टेर ।।

कहते हैं जो भी, दुखड़ों से हारा,
तूने दिया है, उसको सहारा,
मैं भी शरण तुम्हारी आया, आके दर पे शीश झुकाया,
सुनले दयालु श्याम ।। श्याम नहीं तो ... ।। १ ।।

दर-दर भटका, ठोकरें खाई,
थाम जरा अब, मेरी कलाई,
तूने लाखों-लाखों तारे, आया मैं भी तेरे सहारे,
थामों मुझे भी श्याम ।। श्याम नहीं तो ... ।। २ ।।

'हर्ष' खड़ा है, दे दे सहारा,
छोडूं ना अब, तेरा द्वारा,
तूही कहदे किस दर जाऊँ, जाके किसको दर्द दिखाऊँ,
तेरे सिवा हे श्याम ।। श्याम नहीं तो ... ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल)

धीमो चाल रे साथिड़ा, म्हारा पगल्या दुखे रे,
लाय बरसती भरी दोपहरी, मुण्डो सुखे रे ।। टेर ।।

एक हाथ में ध्वजा श्याम की, दूजे हाथ में डोरी रे,
खेंच के चालु आंगलिया की, पोरी धूजे रे ।। १।।

तू तो जबर जवान बावला, मैं तो ठहस्यो बूढो रे,
जोर लगाकर चाल्याँ सै, पिण्डलिया सूजे रे ।। २।।

काली कोसां खाटू हाले, श्याम धणी को ठीडो रे,
एक मिनट में भगत बिचारो, कइयां पुगे रे ।। ३।।

सगला ने यो पार लगावे, देव बड़ो दातारी रे,
'हर्ष' भला अइयाँ ही कोनी, दुनिया पूजे रे ।। ४।।

(तर्ज : नीले नीले अम्बर पर.....)

नीली नीली आँखों का, जादू चल जाये,
देखते जाये - रोक ना पाये,
ऐसा मेरा कान्हा है, श्याम मस्ताना है,
आग दिल में लगा जाये ।। टेर ।।

प्यारी प्यारी वंशी, जब झूमती है तानों में,
मीठी मीठी सरगम, तब गूँजती है कानों मे,
झूमता मन तेरा, नाचता मन मेरा,
पाँव रूक ना पाये, जाने क्या हो जाये ।। १ ।।

भोली भाली सी है, ये चितवन बड़ी निराली,
टेढ़ी मेढ़ी मोहन, है चाल तेरी मतवाली,
सोणे से मुखड़े से, चान्द के टुकड़े से,
आँख ना हट जाये, कुछ ना कर पायें ।। २ ।।

पचरंगी पेचा ये, जब शीश पे तेरे सोहे,
'हर्ष' कहे रे मनवा, हम भगतों का ये मोहे,
श्याम को पाने को, तुझमें खो जाने को,
दिल मेरा ललचाये, क्यां करूं मैं हाय ।। ३ ।।

(तर्ज : झिलमिल सितारों का....)

नैनों के सन्मुख मोहन होगा,
कितना नजारा वो पावन होगा,
धन-धन खाटूवाले मेरा आंगन होगा ।। टेर ।।

आजा रे कन्हैया तुझको हाथों से सजायेंगे,
प्यारे प्यारे गजरों के हार हम पहनायेंगे,
पुल्कित हमारा तन मन होगा ।। १ ।।

चन्दन केशर इत्तर से हम तुझको महकायेंगे,
पलकों कें पालने में झूला हम झुलायेंगे,
बाबा मधुर तेरा कीर्तन होगा ।। २ ।।

स्वागत में दिवाने तेरी राहों में बिछ जायेंगे,
अंसुओं से श्यामा तेरे चरणों को धुलायेंगे,
नैनों से झरता सावन होगा ।। ३ ।।

लीले चढ़कर लीला धारी कीर्तन में जब आयेंगे,
'हर्ष' कहे ये तेरे दीवाने फूले ना समायेंग
आँखों को तेरा दर्शन होगा ।। ४ ।।

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में....)

पलकें उठाके साँवरे, इक बार देख लो,
आँखों से मेरे बह रही, वो धार देख लो ।। टेर ।।

दाता तेरे जहान की, रफ्तार है बड़ी,
किस्मत हमारी क्यूं भला, रूठी हुई पड़ी,
पिछड़ा हूं मैं जमाने से, दातार देख लो ।। १ ।।

बदला है तूने जीत में, कितनों की हार को,
कस्ति हमारी फिर बता, कैसे ना पार हो,
थामा है तूने हाथ को, हर बार देख लो ।। २ ।।

हारा हुआ गरीब हूँ, हारे के साथी सुन,
बदलेंगे तेरे द्वार पे, तेरे 'हर्ष' के भी दिन,
सन्मुख खड़ा हूँ आपके, सरकार देख लो ।। ३ ।।

(तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार...)

पुजारी खोल जरा पट द्वार-२
बंद कोठरी में बैठा मेरा साँवरिया सरकार ।। टेर ।।

थके हुए हैं भक्त बेचारे,
मोहिनी रूप दिखादे प्यारे,
प्रेमीजन को ना बिसरा रे,
आग बरसता सूरज सिर पर लंबी लगी कतार ।। १ ।।

निष्ठुर क्यूं भगतों को धकेले,
व्यर्थ करे झंझट ये झमेले,
भगत बिना भगवान अकेले,
दीनानाथ की शरण पड़ा है ये दुखिया संसार ।। २ ।।

सेवा ही अधिकार है तेरा,
मैं ठाकुर का ठाकुर मेरा,
बीच भला क्या काम है तेरा,
मंदिर कारागार नहीं जिस पर तेरा अधिकार ।। ३ ।।

बाहर प्रेमी तरस रहा है,
अंदर ठाकुर सिसक रहा है,
'हर्ष' कहाँ तू खिसक रहा है,
जीव ब्रह्म को मिलने दे क्युं व्यर्थ बना दीवार ।। ४ ।।

(तर्ज : धरती धोरां री...)

फागण पाछे श्याम बिहारी, म्हानै याद सतावे थारी,
झर-झर आँख्या बरसे म्हारी, ओल्यूं आवे जी..।। टेर ।।

फागणिये में खेल्यो रंग, होऽऽऽ-२, माची होली की हुड़दंग,
बाज्या ढोलक, ढफली, चंग, ओल्यूं आवे जी-२,
इब तो फीको-फीको लागे, कार्तिक पाछे सगला जागे,
ओज्यूं जमघट थारे लागे, ओल्यूं आवे जी...।। १ ।।

गूंजे काना में जयकारा, होऽऽऽ-२, थारे भजनां का फटकारा,
बरसी अमृत रस की धारा, ओल्यूं आवे जी-२,
इब तो सोग्या सेवक थारा, खोग्या काम काज मैं सारा,
ठण्डा पड़ गया किर्तन थारा, ओल्यूं आवे जी...।। २ ।।

थारे भजनां की बै कड़ियां, होऽऽऽ-२, ज्यामें भाव भर्‌या था बढ़िया,
कइयां टूटी सगली लड़ियां, ओल्यूं आवे जी-२,
सोया भगतां ने जगाओ, भजनां की रमझोल मचाओ,
बोले 'हर्ष' थे बेगा आओ, ओल्यूं आवे जी...।। ३ ।।

(तर्ज : मुझे इश्क है तुम्हीं से...)

बन्दे कभी क्या सोचा, बाबा से डर रहा हूँ,
करने चला था क्या क्या, ये क्या मैं कर रहा हूँ।। टेर ।।

कितनों ने श्याम मुझपे अहसान ही किया है,
बदले में मैंने उनको बदनाम ही किया है,
दु:ख बंट रहे थे मेरे, दुखड़ों में बंट रहा हूँ ।। १ ।।

मतलब था मेरा मकसद, कीर्तन था इक बहाना,
स्वार्थ के वास्ते ही, सम्पर्क था बढ़ाना,
बहका रहा था सबको, खुद ही बहक गया हूँ ।। २ ।।

उपदेश ना समझना, ये है 'हर्ष' आप बीती,
दरबार में प्रभु के, मत करना राजनीति,
अलगाव कर रहा था, खुद ही अलग पड़ा हूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : तौबा ये मतवाली चाल....)

बाँझन को देता तू लाल, निर्धन होता मालामाल,
खाटू वाले श्याम तेरी ना, दूजी कोई मिसाल, दयालु तेरा जवाब नहीं ।।

दया की तुम्हारी है आदत पुरानी,
महिमा दयालु की किसी ने न जानी,
शरण जो भी आया, गले से लगाया,
है कलयुग में दुनिया तुम्हारी दिवानी, जहाँ में,
तुमसा नवाब नहीं... ।। १ ।।
जमाने की जिसने ठोकर है खाई,
उसे तेरी चौखट पड़ी है दिखाई,
जो ठुकराये जाते, दया तेरी पाते,
हकीकत है भगतों की होती सुनाई, ये सच है,
झूठा ख्वाब नहीं ... ।। २ ।।
सदा 'हर्ष' हारे को, सहारा मिला है,
तुफाँ में नैया को, किनारा मिला है,
मुश्किले जो आती, बने तू ही साथी,
मुसीबत में हरदम सहारा मिला है, दया का,
कोई हिसाब नहीं ... ।। ३ ।।

(कृष्ण जन्म)

(तर्ज : झूला झूलो री राधे रानी ...)

बाँटों जी बांटो थे बधाई, यशोदा माँ के लाल जायो है ।। टेर ।।

नन्द भवन में ''बाजै नगाड़ा''-३
मैया की आँख को तारो, यो नन्द जी को लाल आयो है ।। १ ।।

आज बिरज में ''खुशियाँ है छाई''-३
नाचे है लोग लुगाई, गायां को रखपाल आयो है ।। २ ।।

चाँदी के पलणे में, ''सुत्यो है ललणो''-३
गोकुल की रक्षा ताईं, ओ कंस तेरो काल आयो है ।। ३ ।।

''हर्ष'' दिवानों देखो ''बाँटे अशरफी''-३
हीरे मोत्यां सुं आज भगतों, यो भर भर थाल ल्यायो है ।। ४ ।।

(तर्ज : जो तुझको हो पसन्द.....)

बाबा को जो पसन्द वही काम करेंगे,
हम दिन हो चाहे रात तुझे श्याम जपेंगे ।। टेर ।।

सीखा है हमने आपसे हारे का साथ देना,
भूलें जो अगर राह तो हाथों को थाम लेना,
हर वक्त श्याम आपका-३ ही ध्यान धरेंगे ।। १ ।।

थामा ना होता हाथ तो गिर जाते हम कभी के,
इतना दिया है आपने आराम जिन्दगी में,
हम जिन्दगी को आपका-३ ईनाम कहेंगे ।। २ ।।

चाहा है 'हर्ष' आपको चाहेंगे आपको ही,
हर पल सलोने साँवरे पूजेंगे आपको ही,
सारे जहाँ में आपका-३ गुणगान करेंगे ।। ३ ।।

(तर्ज : बाबा श्याम के दरबार मची रे होली...)

बाबा श्याम के दरबार भर्‌यो रे मेलो ।। टेर ।।

लेर निशान भगत खाटू चालो,
साँवरे को आय गयो रे हेलो ।। १ ।।

गठ जोड़े सुं सगला चालो,
टाबरा ने थारे सागे लेल्यो ।। २ ।।

रंग गुलाल सुं भरल्यो झोली,
मेले पाछे मिल होली खेलो ।। ३ ।।

'हर्ष' धणी का दर्शण तांई,
भगतां को चाल पड़्यो रे रेलो ।। ४ ।।

(तर्ज : सौ बार जन्म लेंगे)

बेकार की चिन्ता है, बेकार ही रोता है,
जब तक है दया इसकी, तू चैन से सोता है ।। टेर ।।

जीवन ये तेरा प्यारे, तिनको का घरोंदा है,
तूफां के थपेड़ों ने, इसे रह रह रोदां है,
उस वक्त दयालु ये, तेरे पास ही होता है ।। १ ।।

तुमसा बड़भागी कहाँ, तुझे श्याम सहारा है,
पल में दौड़ आया, इसे जब भी पुकारा है,
रक्षक बन करके तेरा, ये पहरा देता है ।। २ ।।

ये कैसा बंधन है, कैसा ये नाता है,
हारे हुए सेवक का, ये साथ निभाता है,
चुटकी में 'हर्ष' तेरे, संकट हर लेता है ।। ३ ।।

(तर्ज : चेहरा क्या देखते हो....)

बैठे क्या सोचते हो, खाटू तो चल कर देखो ना,
किस्मत पल में सँवर जायेगी, बिगड़ी वहाँ पे सुधर जायेगी,
तेरी दुआओं का भी, होगा असर देखो ना ।। टेर ।।

थोड़े सम्भल जाओ, दुख से ना घबराओ, होके परेशान बैठे हो क्यूँ,
हारे का साथी है बाबा मेरा, चुटकी में हर लेगा दुखड़े वो यूं,
झुकना कहीं ना पड़ेगा, चौखट पे झुक कर देखो ना ।। १ ।।

मन से बुलाओगे, गम भूल जाओगे, इतना भरोसा तू करले जरा,
बैठा है खाटू में तेरे लिये, दामन पकड़ लेगा पल में तेरा,
रोना कभी ना पड़ेगा, रोकर तो दर पे देखो ना ।। २ ।।

सबको निभाता है, दीनों का दाता है, ऐसा दयालु ना देखा कहीं,
'हर्ष' तेरा काम बन जायेगा, दुनिया में जो बन सका ना कहीं,
गिरना कभी ना पड़ेगा, चरणों में गिरकर देखो ना ।। ३ ।।

(तर्ज : भरी दुनिया में आखिर दिल....)

भरी आँखें रुआसां दिल, लिये फरियाद आया हूँ,
दुःखों का बोझ मैं अपने, कन्हैया साथ लाया हूँ ।। टेर ।।

सिले है होठ अब मेरे, ''बताऊँ मैं भला कैसे''-२,
जुबां पर आज साँवरिये, मैं ताले बांध लाया हूँ ।। १ ।।

दिखाना भी जरूरी है, ''छिपाना भी जरूरी है''-२,
कलेजे पर लगे देखो, हजारों घाव लाया हूँ ।। २ ।।

वजन आंसु का तुम मेरे, ''भला क्या सहने पाओगे''-२,
छुपा कर आँखों में अपनी, घना सैलाब लाया हूँ ।। ३ ।।

पड़ी जंजीर दुखड़ों की, ''इसे तुम काट दो दाता''-२,
संजो कर 'हर्ष' दिल में मैं, यही जजबात लाया हूँ ।। ४ ।।

(तर्ज : उड़ जा काले कावां...)

मन मोहक सी अदा निराली सूरत ये प्यारी,
ठहर गई है आँखे इनपे जाऊँ मैं वारी,
आज सँवर के बैठा देखो मेरा श्याम सलोना,
हम भक्तों पे कर गया रे कोई जादू टोना,
सलोना मेरा साँवरिया-२ ।। टेर ।।

इत्तर की खुशबू से सारा महक रहा आलम,
लगता है यूं मानो आया फागुन का मौसम,
सजना और संवरना तेरा शौक है श्याम पुराना,
कर गया रे मुस्कानों से हमको आज दिवाना, सलोना मेरा ...।। १ ।।

भोर विभोर किया हैं तूने भगतों को प्यारे,
जबसे देखी प्यारी चितवन हो गये मतवारे,
एक नजर जिसने भी देखा सेवक वो भरमाया,
तीर निगाहों के हैं दागे अपना आज बनाया, सलोना मेरा ... ।। २ ।।

'हर्ष' सजे हैं ठाकुर मेरे नजर उतारो चल कर,
काजल का टीका लगवा दो, श्याम के गालों ऊपर,
सजता रहा है सजता रहेगा, ये दरबार तुम्हारा,
लूट रहा है और लूटेगा दिल का चैन हमारा, सलोना मेरा ... ।। ३ ।।

(तर्ज : छुप छुप खड़े हो...)

मांगना पड़े ना हमे काम ऐसा कीजिए,
मांगने से पहले भगतों को श्याम दीजिए ।। टेर ।।

मजबूरी में ही श्याम कोई कुछ मांगता,
पर बाबा भगतों के मन की तू जानता,
झुकना पड़े ना इंतजाम ऐसा कीजिए ।। १ ।।

मांगने वाला तो श्याम मरता हजार बार,
मेरे दानी भगतों को तुझपे है ऐतबार,
मरना पड़े ना कभी दान ऐसा दीजिए ।। २ ।।

दुनिया से मांगों तो उधार कहलायेगा,
दानी कभी देके लेने 'हर्ष' न आयेगा,
अरजी लगाई बाबा ध्यान जरा दीजिए ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल)

माची मंदिर में बाबा जी थारे होली की हुड़दंग,
कोई तो मारे भर पिचकारी, कोई लगावे रंग ।। टेर ।।

केशर चंदन और केवड़ो लाल गुलाल घुलायो जी,
ठण्डाई के मांही मिलाई, आज जरा सी भंग ।। १ ।।

भजना की सुरताल पे सगला, टेर सूं टेर मिलावे जी,
छम छम नाचे मस्ताना, और बाज रह्या है चंग ।। २ ।।

होली की मस्ती में थारो, लीलो घोड़ों झूमे जी
उछल उछल कर नाचे देखो, हो गयो मस्त मलंग ।। ३ ।।

ऐसी होली आज तलक म्हें 'हर्ष' कदे ना देखी जी,
तिरलोकी को नाथ नाच रह्यो, निज भगतां के संग ।। ४ ।।

(तर्ज : दिवाने हैं दिवानों को ना घर)

मिलेगा मेरा साँवरा ''बिना ही जतन'' -२,
हारे हुए का ''सहारा तु बन'' -२ ।। टेर ।।

मेरे श्याम को चाहो ''पाना अगर''-२,
तो करनी में तेरे ''असर पैदा कर''-२,
खुशी जिसकी आँखों को दे जायेगा-२,
तो बाबा को हँसता ''वही पायेगा''-२,
खिलेगा बिना माली बन्दे ''तेरा चमन''-२ ।। १ ।।

लगा ना सका भोग ''छप्पन तो क्या''-२,
तू भूखे को रोटी ''खिलादे जरा''-२,
अगर पेट भूखे का भर जायेगा-२,
तो इसको तेरा भोग ''लग जायेगा''-२,
चढ़ेगा प्यारे चरणों में ''तेरा नमन''-२ ।। २ ।।

उसुलो पे इसके तू ''चलना सदा''-२,
दया करने की तेरी ''आदत बना''-२,
दया दीन पे जो तु दिखलायेगा-२,
तो किरपा दयालु की ''पा जायेगा''-२,
रहेगा 'हर्ष' मस्ती में ''हरदम मगन''-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ दूर के मुसाफिर.....)

दोहा : तुझे ढूँढता यहाँ पे, कहाँ छुप गये कन्हाई।
लो रो पड़ी ये आँखे, तुझको दया न आई।।

मुझको तलाश तेरी, ऐ हारे के सहारे रे,
ऐ हारे के सहारे, हारा हूँ मैं तो आ रे ।। टेर ।।

नाकामियों का मारा, भटके है ये बेचारा,
बरबादियों ने घेरा, ''ढूँढ़े तेरा बसेरा''-२,
आजा दयालु तुझको, तेरा लाडला पुकारे रे ।। १ ।।

भूला हूँ खुद की हस्ति, फिरता हूँ बस्ती बस्ती
यूं ही तोलते रहोगे, ''या फिर मुझे मिलोगे''-२,
तेरी आस में ही मैंने, रो रो के दिन गुजारे रे ।। २ ।।

मैंने सुना है जैसा, गर श्याम तू है वैसा,
अब देर ना लगा रे, ''गिरते को आ उठा रे''-२,
तेरा 'हर्ष' जीत पाये, अब तेरे ही सहारे रे ।। ३ ।।

(तर्ज : मुखड़ा : हम तुमको निगाहों में इस तरह बसा लेगें...)
(अन्तरा : दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है...)

मेरे घर में श्याम होवे, मंदिर तुम्हारा प्यारा,
जो देखे उसे लागे, घर स्वर्ग सा हमारा ।। टेर ।।

रात दिन तेरी वहाँ पे ज्योत जलती हो,
श्याम की किरपा मुझे हर रोज मिलती हो,
बस तेरी ही दया से, हम सबका हो गुजारा ।। १ ।।

श्याम इस परिवार का मुखिया तू बन जाना,
घर के सारे फैसले तुम खुद ही कर देना,
हम बच्चों को मिलेगा, तेरा हर पल ही सहारा ।। २ ।।

बस तेरे आने से किस्मत जाग जायेगी,
हर मुसीबत घर से मेरे भाग जायेगी,
फिर 'हर्ष' खिल उठेगा, गुलशन बड़ा ही प्यारा ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरा साथ है तो...)

मेरे श्याम मुझमें कमी ही कमी है,
तेरा साथ ना हो तो कुछ भी नहीं है ।। टेर ।।

मतलब का है दास तुम्हारा,
कभी ना किसी को दिया है सहारा,
मेरे श्याम तुझसा दूजा नहीं है,
तेरे नाम से मेरी दुनिया बसी है ।। १ ।।

तू ही है साथी मेरा हमदम,
खुशी से भरा है सदा मेरा दामन,
मेरा गम तुझे तो गवारा नहीं है,
बिना तेरे जग में गुजारा नहीं है ।। २ ।।

टूट ना पाये प्रेम की डोरी,
'हर्ष' दया बाबा रखना तू थोड़ी,
तेरी प्रीत दिल में समा ही गई है,
मुझे श्याम तेरा बना ही गई है ।। ३ ।।

(तर्ज : बड़ी दूर से आये हैं.....)

मैं हार के आया हूँ, श्याम तेरी शरण में आया हूं,
पापों की मैं गठरी ले, श्याम तेरी शरण में आया हूँ ।। टेर ।।

मेरी भूलें इतनी है, भुलाई नहीं जाये,
पापों की गिनती, गिनाई नहीं जाये,
मैं मुक्ति-३, पाने आया हूँ ।। १ ।।

मुझसे तो मानू मैं, हुई है नादानी,
लेकिन तू है, दयालु और दानी,
मैं माफी-३, मांगने आया हूँ ।। २ ।।

जो क्षमा मैं मांग सकूं, नहीं हूँ इस काबिल,
'हर्ष' का जीवन, हुआ है बोझिल,
सम्भालो-३, ठोकर खाया हूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : हम तुम एक कमरे में बन्द....)

मोहन, तेरी मुरली दिवानी, मेरा जिया भरमाये,
तेरी बंशी की धुन में सुध सारी, राधा भूल जाये ।। टेर ।।

ऐसी तूने दिल में उतारी, मानो कोई मीठी कटारी,
जीना हुआ अब मेरा मुश्किल, सोना हुआ अब मेरा मुश्किल,
बोलो कैसा जादू ये किया रे-२ ।। १ ।।

ऐसे तेरा मुरली बजाना, कान्हा करे मोहे दिवाना,
नाचूं मैं बनके बावरिया, उड़ी जाये सिर से चुनरिया,
बोलो कैसा जादू ये किया रे-२ ।। २ ।।

सुनती हूँ सखियों की बोली, 'हर्ष' हुई रे ठिठोली,
ताने अब सहने ना पाऊँ, बंशी बिन रहने ना पाऊँ,
बोलो कैसा जादू ये किया रे-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : याद न जाये बीते दिनों की....)

याद सताये, श्याम तुम्हारी,
चैन न आये तुझ बिन, रो रो बुलायें तुझे
रो रो बुलायें...।। टेर ।।

तस्वीर दिल में उतारी, मोहिनी अदायें प्यारी-२,
देखता हूँ बस तुझको-२, भूला हूँ दुनिया सारी,
बैठा हूँ सुध बिसराये ।। १ ।।

जब से निहारी झाँकी, बांके की चितवन बांकी-२,
मन में मची है हलचल-२, कुछ भी रहा ना बाकी,
बैठा हूँ होश भुलाये ।। २ ।।

दिल ये पुकारे आजा, साँसों में 'हर्ष' समा जा-२,
प्रेमी हूँ तेरा मोहन-२, मुझसे भी प्रीत निभाजा,
बैठा हूँ आस लगाये ।। ३ ।।

(तर्ज : रहा गर्दिशों में हरदम)

रहा श्याम बाबा हरदम, मेरे सिर पे तेरा साया,
मुरझा चुका जो बिल्कुल, तूने फूल वो खिलाया ।। टेर ।।

वो गमों की आँधियों में, जब लौ ये थरथराई,
ये चिराग बुझ रहा था, इसे तूने फिर जलाया ।। १ ।।

जीवन के ऊँचे नीचे, इन रास्तों पे मेरे,
ये कदम जो लड़खड़ाये, तू मसीहा बनके आया ।। २ ।।

मैंने मुश्किलों में सारे, दरवाजे बंद पाये,
उस वक्त द्वार तेरा, मैंने खुला ही पाया ।। ३ ।।

दरियादिली के किस्से, कैसे कहुँ तुम्हारे,
इस 'हर्ष' को दयालु, तूने गोद में बिठाया ।। ४ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)

लग जायेगी लगन धीरे धीरे,
साँवरे से होगा मिलन धीरे धीरे ।। टेर ।।

प्रेम दिखा तू मीरा के जैसा,
करले भरोसा करमा के जैसा,
जुड़ जाएगा ये मन धीरे-धीरे ।। १ ।।

धन्ना का बनके आया था हाली,
खेतों की इसने की थी रूखाली,
खिल जायेगा चमन धीरे-धीरे ।। २ ।।

अर्जुन सरीखा करले समर्पण,
चरणों में करदे खुद को तू अर्पण,
भड़क उठेगी अगन धीरे-धीरे ।। ३ ।।

दिल को लगाले चरणों में प्यारे,
'हर्ष' रहेगा संग में तुम्हारे,
महसूस होगी छुअन धीरे-धीरे ।। ४ ।।

(तर्ज : मुन्नी बदनाम हुई...)

लल्ला बदनाम हुआ, गूजरी तेरे लिए,
लल्ला को चोर बताई, डॉट खिलाई धौंस दिखाई रे,
झूठा इल्जाम लागा, गूजरी तेरे लिए ।। टेर ।।

है घर में मेरे, ''माखन का घड़ा''-२
खा खा के लल्ला, ''हुआ है बड़ा''-२
माखन के मेरे घर में छीकें भरे हैं, अरी देखो जरा,
चरचा ये आम हुआ, गूजरी तेरे लिए ।। १ ।।

अच्छी नहीं है छोरी, ''तोरी नजर''-२
मेरे लाला की तो है ''बाली उमर''-२
छोटो से छोरो कैसे छेड़े है तौहे, मोहे जल्दी बता,
जीना हराम हुआ, गूजरी तेरे लिए ।। २ ।।

तू तो पणिहारी, ''है झूठी बड़ी''-२
'हर्ष' लाला ने नाहीं, ''मटकी फोड़ी''-२
मटकी पे मटकी धरे चलती इतर के, पैर फिसला तेरा,
लल्ला का नाम हुआ, गूजरी तेरे लिए ।। ३ ।।

(तर्ज : खिजा के फूल से आती नहीं..)

लगी है आस वो आये कहीं दातार मेरा,
इसी उम्मीद में ऐ श्याम इंतजार तेरा ।। टेर ।।

ना जाने साँवरे कब ये, निगाह थक जाये,
ये गम के आँसु मेरे ना अब, आज रूक पाये,
तेरे लिए ही हुआ दिल ये, बेकरार मेरा ।। १ ।।

मैं श्याम कबसे विरह में, आह भरता हूँ,
मैं आज एक पलक तेरी, राह तकता हूँ,
यही तमन्ना मुझे अब तो, हो दीदार तेरा ।। २ ।।

ये 'हर्ष' तुझसे गुजारिश, करे दयालु आ,
तुम्हारी प्यारी छवि दिल में, मैं बसा लूं आ,
सुनोगे दिल की कन्हैया है, ऐतबार तेरा ।। ३ ।।

(राग रचयिता : रजनीश शर्मा)

दोहा : नैन निगोड़े बावरे, बाट उडीकत तोय ।
चरणन को तेरे साँवरे, अंसुवन से ये धोय ।।

लागी रे मोहे साँवरे की लगन-२,
जैसे दीया बाती, जलुं दिन राती,
कैसी लागी है ये अगन ।। टेर ।।

कर गया मोहना, आज कैसा जादू,
हो गया दिल मेरा, श्याम तेरे काबू,
हसुं कभी रोऊँ, जागु ना मैं सोऊँ, ऐसी हुई रे मैं मगन ।। १ ।।

हर घड़ी ये जुबां, गीत तेरे गाये,
राह देखुं मैं तेरी, जाने कब तू आये,
ख्वाबों में तू मेरे, खयालों में तू मेरे, अब तो साँवरे सजन ।। २ ।।

क्या हुआ दिल मेरा, जो तुझे है हारा,
मिल गया 'हर्ष' को, साँवरा ये प्यारा,
सपना सा लागे, अपना तू लागे, गाऊँ तेरे ही मैं भजन ।। ३ ।।

(तर्ज : खड़-खड़ खड़क्या मंजा)

वृंदावन में सखियों के संग किसने रास रचाया,
शरणागत को बोलो भगतों किसने गले लगाया,
थोड़ा काला काला कौन, मेरा बंशी वाला,
दीनों का रखवाला कौन, मेरा खाटू वाला ।। टेर ।।

होठों पे किसके मुरली विराजे, मोर छड़ी किसके हाथों में साजे,
राधे जी का प्यारा कौन, मेरा बंशी वाला,
हारे का रखवारा कौन, मेरा खाटू वाला ।। १ ।।

गुजरी का माखन किसने चुराया, निर्बल का किसने साथ निभाया,
माखन चोर कुहाये कौन, मेरा बंशी वाला,
लखदातार कुहाये कौन, मेरा खाटू वाला ।। २ ।।

नीली सी आँखे बांकी अदाएँ, खोल खजाना माल लुटाए,
मोहित करने वाला कौन, मेरा बंशी वाला,
संकट हरने वाला कौन, मेरा खाटू वाला ।। ३ ।।

'हर्ष' है किसकी दुनिया दिवानी, किसको कहे सारे शीश का दानी,
जग में लीला धारी कौन, मेरा बंशी वाला,
कलयुग का अवतारी कौन, मेरा खाटू वाला ।। ४ ।।

(तर्ज : हुस्न पहाड़ों का.....)

हर दिन मेला है, यहाँ पे तेरा,
क्या कहने कि बारहों महिने, भगतों का रेला है ।। टेर ।।

दर्शन को तेरे लम्बी कतारें, गूंज रहे तेरे जय जयकारे,
मंदिर के बाबा तेरे अजब नजारे-२,
''श्याम सजीला है'', यहाँ पे मेरा,
दूजा ना इस जैसा, ये देव रंगीला है ।। १ ।।

दूर दूर से सेवक आये, पेट के बल कोई लेट के आये,
पैदल कोई कोई पसर के आये-२,
''बड़ा अलबेला है'', ये लीले वाला,
संग संग रहता है श्याम, यहाँ कोई ना अकेला है ।। २ ।।

जब ग्यारस की ज्योत जगाली, लगता है मानो आई दिवाली,
खाटू की है हर रात निराली-२,
''श्याम की लीला है'', खाटू में मेरे-२,
रूतबा है 'हर्ष' बड़ा, ये देव हठीला है ।। ३ ।।

(तर्ज : पतझड़ सावन...)

हर युग में जनमेऽऽऽ अवतार,
सृष्टी के बस ''युग है चार''-३
कलयुग मेरे श्याम का, मेरे श्याम का ।। टेर ।।

तेरी जै जै - जै जै जै,
तेरी जय जय कृष्ण कन्हाई, तूने लीला खूब रचाई-२,
बरबरीक को शीश के बदले, कलयुग दिया ''तूने दान''-२, हर...।। १।।

शीश धार में बहकर आया, खाटू नगरी धाम बनाया-२,
मकराने का श्याम तुम्हारा, भवन बना ''आलीशान''-२, हर ...।।२।।।

धन धन बाबा हो ऽऽ हो,
धन धन बाबा श्याम हमारे, सारा कलियुग नाम तुम्हारे-२,
जनमों जनम तक हम बच्चों को, मिलता रहे ''तेरा प्यार''-२, हर ...।।३।।

हारे हुए का श्याम सहारा, दर पे बहती करुण धारा-२
जिसने दिल से नाम पुकारा, हाजिर हुआ ''मेरा श्याम''-२, हर ...।। ४।।

कार्तिक की जब ग्यारस आए, 'हर्ष' जयन्ति सारे मनाये-२,
फागुन के महिने में लगता, मेला बड़ा ''ही विशाल''-२, हर ...।। ५ ।।

(हरियाणवी भजन)

(तर्ज : ताली बाजण दे.....)

हो, मेला फागण का, अररर मेला फागण का,
मैं ढुमके-३ मारूं आज यो मौसम नाचण का ।। टेर ।।

श्याम के दर पे चालो रे,
लेकर के -३, श्याम निशान थे बेगा हालो रे ।। १ ।।

श्याम की गाड़ी जावै सै,
बेगा सा-३, हो जा त्यार क्यूं देर लगावे सै ।। २ ।।

खाटू में मौज उड़ावागें,
भर भर के -३, थाली दाल चूरमा खावागें ।। ३ ।।

चरणां में धोक लगावेगा,
तेरा कटज्या-३, काया रोग तू मौज मनावेगा ।। ४ ।।

''हर्ष'' श्याम के जावेगा,
फागण में-३, बाबा श्याम की किरपा पावेगा ।। ५ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)

शरण पड़ेगा तू जो दिवाने, तुझे गले से लगा ही लेगा,
बड़ा दयालु है खाटू वाला, रोते को पल में हँसा ही देगा ।। टेर ।।

कहते हो जिसको अपना यहाँ पर, खुशी तुम्हारी भाये ना उसको,
चाहेंगे तुझको हरदम गिराना, पर मेरा बाबा उठा ही लेगा ।। १ ।।

झूठी अदालत है इस जहाँ की, न्याय कभी ना देगी ये तुझको,
चाहेगी तुझको सजा ही देना, पर मेरा बाबा बचा ही लेगा ।। २ ।।

रोशन है जिस दीपक से तुम्हारे, आंगन का हर इक कोना दिवाने,
चाहेंगे दुनिया वाले बुझाना, पर मेरा बाबा जला ही देगा ।। ३ ।।

भूला है अपनी मंजिल को प्यारे, दर दर भटकता है क्यूं परेशां,
'हर्ष' शरण में आकर तो देखो, भूले को रस्ता दिखा ही देगा ।। ४ ।।

(तर्ज : प्यार किया तो डरना क्या.....)

श्याम के होते डरना क्या, मेरे
श्याम धणी है, रक्षक तेरे,
और तुम्हें अब करना क्या ।। टेर ।।

अपने तुम्हारे काम ना आये, वक्त पड़े तो आँख चुराये,
आस करो तो श्याम से करना, और किसी से करना क्या ।। १ ।।

रोकर सुनना हँस के उड़ाना, दुनिया का ये शौक पुराना,
परवाह करो तो श्याम की करना, बंदों की परवाह करना क्या ।। २ ।।

आँसुं किसी को तुम ना दिखाना, हँसी उड़ाये ये जालिम जमाना,
'हर्ष' कोई ना आँखें पोछे, झूठा भरोसा करना क्या ।। ३ ।।

(राग रचयिता : विकास कपूर मो॰ 9830210437)

श्याम सुनते हैं, दुखियों के दर्द सदा,
तुझे कहना ना आये तो ये क्या करे,
ये तो भरते हैं, भगतों का दामन सदा
तुझे मांगना ना आए तो ये क्या करे ।। टेर ।।

ये तो हारे का हरदम सहारा बना, टूटी कश्ती का आके किनारा बना-२,
बाबा हारे हुए को जिताते सदा, तू जीतना ना चाहे तो ये क्या करे ।। १ ।।

देखा गिरते हुए को उठाते हुए, देखा रोते हुए को हँसाते हुए-२,
ये तो मरते हुए को दे जिन्दगी, तुझे मरना ना आये तो ये क्या करे ।। २ ।।

चप्पे चप्पे में बाबा का डेरा है, साफ सुथरे दिलों में बसेरा है-२,
तेरे नजदीक बैठा हुआ है कहीं, तुझे देखना ना आये तो ये क्या करे ।। ३ ।।

श्याम बहादुर को दीनों के दाता मिले, 'हर्ष' यूं ही नहीं पल में ताले खुले-२,
ये तो रख देगें सिर पर हाथ तेरे, तुझे झुकना ना आये तो ये क्या करे ।। ४ ।।

(तर्ज : जिन्दगी प्यार का गीत है...)

साँवरा दीन का मीत है, इसकी चौखट पे आना पड़ेगा,
साँवरा सबकी सुनता यहाँ, आके सर को झुकाना पड़ेगा ।। टेर ।।

कोई हारा हुआ है तो क्या, गम का मारा हुआ है तो क्या-२,
ना है साथी कोई भी तो क्या, इसको साथी बनाना पड़ेगा ।। १ ।।

सूनी काली अगर रात है, डरने की ना कोई बात है-२,
ये तो हरपल तेरे साथ है, इसे दिल से बुलाना पड़ेगा ।। २ ।।

जिसकी आँखों में दुखड़े सजे, सारे अरमान दिल के बुझे-२,
उसको ऊंगली पकड़ के तुझे, 'हर्ष' खाटू तो लाना पड़ेगा ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन वेदी मो॰ 9830432669)

साँवरे तू बोल रे, साँवरे तू बोल रे,
कान्हा मेरा दिल जिगर-२, खो गया जाने किधर ।। टेर ।।

मैं तो गया मंदिर में दर्शन को तेरे,
दिल ये बैरी ना रहा काबू में मेरे,
ढूँढू इसे मैं-२, बोलो किधर ।। १ ।।

साँवली की सूरत पे चितवन ये प्यारी,
देखते ही भूल गया सुधबुध मैं सारी,
तुमने मारी क्यूं-२, तिरछी नजर ।। २ ।।

देखता रहूँ तुझको यूँ ही जीवन भर,
'हर्ष' ना जुदा होना आँखों से पल भर,
जादू किया क्या -२, ओ जादूगर ।। ३ ।।

(तर्ज : साथिया नहीं जाना...)

साँवरे तेरे दर्शन से जी ना भरे,
दूरी सही ना जाये, हम क्या करें ।। टेर ।।

पहली पहली बार मैं, दर्शन को प्यारे, आया दर पे तुम्हारे, तेरा हो गया,
मुखड़े से साँवरे, नजरें हटाऊँ, तो हटा नहीं पाऊँ,
क्या ये हो गया, छोड़ों युं तरसाना,
क्यूं दिल्लगी करे ।। १ ।।

मेरे प्यारे मोहना, तुमसे दिल लगाया, तुझे दिल में बसाया, तुझे क्या पता,
देखी जबसे ये अदा, तेरे हम तो हो गये,
अँखियो में खो गए, जाने क्यूं भला,
कान्हा युं सता ना, हम आहें भरें ।। २ ।।

कहना मेरा मानले, आती है रूलाई, 'हर्ष' मेरी कलाई, आके थाम ले,
बाबा इतना जान ले, हम तो हैं तुम्हारे,
तेरे दर्शन के मारे, आजा सामने,
छुप के बैठे कान्हा, क्यूं हमसे परे ।। ३ ।।

(झूला भजन)

(तर्ज : निदिंया से जागी बहार...)

सावन में कृष्ण मुरार,
झूला झूले कदम की डार,
कोयल कूके कूके गाये मल्हार ।। टेर ।।

राधा के संग श्याम बिहारी,
झोटा देवे सखियाँ सारी,
युगल छवि पे जाऊँ, मैं बलिहारी ।। १ ।।

झूलन की ये रूत मतवाली,
झूम रही है डाली डाली,
कूक रही देखो, कोयल काली ।। २ ।।

तन मन भीगे बरसे पानी,
पुल्कित हो गई राधे रानी,
'हर्ष' प्रभु की लीला, जाये ना बखानी ।। ३ ।।

(तर्ज : लो आज आया रे....)

दोहा : सिंहासन बैठा मुस्काये, लीले का असवार ।
नजर कहीं ना लग जाये जीऽ, लेवो नजर उतार ।।

श्रृंगार साँवरिये गजब का तेरा है,
बड़ा सोणा सोणा लागे, बड़ा प्यारा प्यारा लागे,
ये गल बैजन्ती हार, गजब का तेरा है ।। टेर ।।

रजनी गुलाब जुही चम्पा के गजरे,
देखते ही बनते हैं श्याम तेरे नखरे,
दातार ये दरबार, गजब का तेरा है ।। १ ।।
मोर मुकुट में ये हीरा तेरे चमके,
साँवरे के बाजुओं में बाजुबन्ध दमके,
साँवलिये नौलख हार, गजब का तेरा है ।। २ ।।
घेर घुमेर तेरा बागा मतवाला,
सजधज बैठा देखो मेरा खाटूवाला,
मुखड़े पर तेज अपार, गजब का तेरा है ।। ३ ।।
लूट सके तो आज लूट ले दिवाने,
'हर्ष' लुटाने आया साँवरा खजाने,
ये रहमत का भण्डार, गजब का तेरा है ।। ४ ।।

श्री श्याम जी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय।।

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।

झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरै ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐजय ।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।

जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ।
अञ्जनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज सँवारे ।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरनी पर, आन संजीवन प्राण उबारे ।
पैठी पाताल तोरी यम कारे, अहिरावण की भुजा उखारे ।
बाएँ भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संत जन तारे ।
सुरनर मुनि जन आरती उतारे, जै जै जै हनुमानजी उचारे ।
कञ्चन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अञ्जना माई ।
जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे ।
लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी कीरति गाई ।।